IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

समकालीन रचनाकारों में वृद्धा विमर्श

Smt. Rekha Kumari Singh
Assistant Professor,
Department of Hindi
A.K. Singh College, Japla,
Palamu, Jharkhand

सार

समकालीन साहित्य में, वृद्धावस्था एक महत्वपूर्ण विषय बनकर उभरा है। अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में वृद्धजनों के जीवन, उनकी समस्याओं, भावनाओं और अनुभवों को बखूबी चित्रित किया है। इस प्रवृत्ति को "वृद्धा विमर्श" के नाम से जाना जाता है। वृद्धा विमर्श का महत्व अनेक स्तरों पर है। यह समाज को वृद्धजनों के प्रति संवेदनशील बनाता है, उनकी समस्याओं को समझने में मदद करता है, और उन्हें सामाजिक न्याय दिलाने के लिए प्रेरित करता है। समकालीन रचनाकारों ने वृद्धा विमर्श को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। कुछ रचनाकारों ने वृद्धजनों की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया है। उदाहरण के लिए, मन्नू भंडारी के उपन्यास "आखिरी पड़ाव" में एक विधवा वृद्धा की कहानी है जो अपने बेटों द्वारा उपेक्षित और बेसहारा है। कमलेश्वर के उपन्यास "कच्चा नीम" में भी एक ऐसे वृद्ध व्यक्ति का चित्रण है जो समाज में अपनी जगह खो चुका है। कुछ अन्य रचनाकारों ने वृद्धजनों के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर ध्यान दिया है। उदाहरण के लिए, जया बच्चन की कविताओं में अक्सर अकेलेपन, बीमारी और मृत्यु के भय जैसी भावनाओं को व्यक्त किया गया है। कुँवर नारायण के उपन्यास "अग्निपुत्र" में भी एक ऐसे वृद्ध व्यक्ति का चित्रण है जो जीवन के प्रति मोहभंग हो चुका है।

कीवर्ड

समकालीन, , वृद्धा , साहित्य

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

परिचय

समकालीन रचनाकारों द्वारा वृद्ध विमर्श को साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इन रचनाओं के माध्यम से न केवल वृद्धजनों की समस्याओं और अनुभवों को समझने में मदद मिलती है, बल्कि समाज में उनके प्रति सम्मान और सहानुभूति का भाव भी विकसित होता है। समकालीन साहित्य में वृद्धों को अक्सर अकेला और एकाकी चित्रित किया गया है। उनके बच्चे अपने काम और परिवारों में व्यस्त होते हैं, जिसके कारण वे अपने माता-पिता को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं। इसके अलावा, समाज में वृद्धों के लिए सामाजिक अवसर कम होते हैं, जिसके कारण वे अकेलापन महसूस करते हैं।

समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में वृद्धों द्वारा अनुभव की जाने वाली बीमारियों और उनके जीवन पर उनके प्रभाव को दर्शाया है। कैंसर, अल्जाइमर और पार्किंसंस जैसी बीमारियां वृद्धों के जीवन को काफी कठिन बना सकती हैं। मृत्यु जीवन का अंतिम सत्य है, और वृद्धावस्था में इसकी संभावना अधिक होती है। समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में मृत्यु के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाया है। कुछ रचनाओं में मृत्यु को भय और दुःख के रूप में चित्रित किया गया है, जबकि अन्य रचनाओं में इसे जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा माना गया है। कई समाजों में, वृद्धों को बोझ समझा जाता है और उन्हें सामाजिक गतिविधियों से बाहर रखा जाता है। समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में इस सामाजिक बहिष्कार को उजागर किया है और इसके वृद्धों पर होने वाले नकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डाला है। वृद्धावस्था में, लोग जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलते हैं। वे भौतिक सुखों से अधिक आध्यात्मिकता और जीवन के गहरे अर्थों की तलाश करते हैं। समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में वृद्धों के जीवन के प्रति इस बदले हुए दृष्टिकोण को दर्शाया है।

हिंदी साहित्य में, कृष्णा सोबती, शिवानी, और मन्नू भंडारी जैसे लेखकों ने अपनी रचनाओं में वृद्धावस्था के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। उनके उपन्यासों और कहानियों में, हम वृद्धों के जीवन के संघर्षों, चुनौतियों और आशाओं को देखते हैं। कविता में, अरुणा शर्मा, कुसुम

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

अस्थाना, और ज्ञान प्रकाश "मिश्र" जैसे कवियों ने अपनी रचनाओं में वृद्धावस्था के विषयों को संबोधित किया है। उनकी कविताओं में, हम वृद्धों के जीवन के विभिन्न भावों को देखते हैं, जैसे - दुःख, अकेलापन, प्रेम, और जीवन के प्रति आभार। समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में वृद्धावस्था के विभिन्न पहलुओं को उजागर करके समाज में वृद्धों के प्रति जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मन्नू भंडारी, हिंदी साहित्य की एक प्रख्यात लेखिका, जिन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से उकेरा। उनका उपन्यास "आखिरी पड़ाव" स्त्री-पुरुष संबंधों, सामाजिक रूढ़ियों और जीवन के विभिन्न चरणों से जुड़ी भावनाओं का एक सशक्त चित्रण प्रस्तुत करता है। "आखिरी पड़ाव" कहानी, रानी नामक एक बुजुर्ग स्त्री के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है। रानी, अपने पति राजेश्वर के साथ दिल्ली में रहती है। राजेश्वर, एक सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी हैं, जो अपनी पत्नी के प्रति उदासीन रहते हैं। रानी, अपने अकेलेपन और पति की उपेक्षा से परेशान रहती है। उनकी बेटी, शीला, अपने पति और बच्चों के साथ अमेरिका में रहती है। रानी अपनी बेटी और पोते-पोतियों को बहुत याद करती हैं, लेकिन उनसे मिलने के लिए वह अमेरिका नहीं जा पाती। एक दिन, रानी को अपने पड़ोसी, अशोक से दोस्ती होती है। अशोक, एक विधुर अध्यापक हैं, जो रानी के जीवन में खुशियां लाते हैं। रानी और अशोक, एक-दूसरे के साथ समय बिताते हैं और अपनी-अपनी समस्याएं साझा करते हैं।

धीरे-धीरे, रानी और अशोक के बीच एक गहरा लगाव पैदा होता है। लेकिन, सामाजिक रूढ़ियां और उम्र का अंतर उन्हें अपने रिश्ते को आगे बढ़ाने से रोकते हैं। इसी बीच, रानी को पता चलता है कि वह कैंसर से पीड़ित हैं। अपनी बीमारी के बारे में जानकर, रानी जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण अपनाती हैं। उपन्यास का अंत, रानी की मृत्यु के साथ होता है। अपनी मृत्यु से पहले, रानी अपने पति और बेटी को माफ कर देती हैं और अशोक के साथ बिताए पलों को याद करती हैं।

"आखिरी पड़ाव" हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। यह स्त्री जीवन, सामाजिक रूढ़ियों और जीवन के विभिन्न चरणों से जुड़ी भावनाओं का एक सशक्त चित्रण प्रस्तुत करता है। मन्नू

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

भंडारी ने इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री जीवन की जटिलताओं और सामाजिक रूढ़ियों पर एक मार्मिक टिप्पणी की है।

समकालीन रचनाकारों में वृद्धा विमर्श

कमलेश्वर हिंदी के एक प्रसिद्ध लेखक, नाटककार, और कवि थे। "कच्चा नीम" उनका एक प्रसिद्ध उपन्यास है जो 1972 में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास एक युवा लड़के, रवि, की कहानी है जो 1947 में भारत के विभाजन के दौरान अपनी मां और बहन के साथ दिल्ली आता है। उपन्यास रवि के अनुभवों का वर्णन करता है क्योंकि वह अपने नए जीवन में समायोजित करने का प्रयास करता है। वह पंजाबी शरणार्थियों के एक समुदाय में रहता है, और उसे भेदभाव, हिंसा और गरीबी का सामना करना पड़ता है।

"कच्चा नीम" एक शक्तिशाली और मार्मिक उपन्यास है जो विभाजन के मानवीय लागत का चित्रण करता है। यह एक ऐसा उपन्यास है जो पाठकों को भारत के इतिहास और संस्कृति की गहरी समझ प्रदान करता है। "कच्चा नीम" हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण कृति है। यह विभाजन के मानवीय लागत का एक शक्तिशाली और मार्मिक चित्रण है। यह एक ऐसा उपन्यास है जो पाठकों को भारत के इतिहास और संस्कृति की गहरी समझ प्रदान करता है। उपन्यास का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है और इसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। यह भारत और विदेशों में पाठकों द्वारा पसंदीदा है।

उपन्यास के कुछ प्रमुख विषय:

विभाजन का दर्द: "कच्चा नीम" विभाजन के दर्द और पीड़ा का एक शक्तिशाली चित्रण है। रवि और उसके परिवार को अपने घर और अपनी मातृभूमि छोड़ने के लिए मजबूर किया जाता है, और उन्हें एक नई जिंदगी शुरू करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022**

भेदभाव और हिंसा: पंजाबी शरणार्थियों को दिल्ली में भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है। उन्हें अक्सर मुसलमानों के रूप में देखा जाता है, और उन्हें हिंदू समुदाय द्वारा दुश्मन के रूप में देखा जाता है।

गरीबी और अभाव: विभाजन के बाद भारत में गरीबी और अभाव व्यापक था। रवि और उसका परिवार गरीबी में रहता है, और उन्हें भोजन और आश्रय के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

लचीलापन और आशा: "कच्चा नीम" मानवीय भावना की कहानी भी है। रवि और उसके परिवार में अविश्वसनीय लचीलापन और आशा है। वे अपने जीवन का पुनर्निर्माण करने और एक बेहतर भविष्य बनाने के लिए दृढ़ हैं।

महादेवी वर्मा हिंदी की छायावादी कवयित्रियों में अग्रणी स्थान रखती हैं। उनका काव्य-संग्रह "यामा" उनके चार प्रसिद्ध संग्रहों - "नीहार", "नीरजा", "रश्मि" और "सांध्यगीत" - का संकलन है। यह संकलन उनकी गहन भावनाओं, प्रकृति के प्रति प्रेम और आध्यात्मिक खोज का सार प्रस्तुत करता है, जिसके लिए उन्हें 1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

"यामा" का अर्थ "नियंत्रण" होता है। इस शीर्षक के माध्यम से कवयित्री संकेत देती हैं कि ये कविताएँ पाठक को भावनाओं के ज्वार से बाहर निकालकर आत्मिक शांति की ओर ले चलती हैं। संग्रह प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन करते हुए आरंभ होता है, जो महादेवी वर्मा की रचनाओं में सर्वत्र विद्यमान है। वह सूर्योदय, पहाड़ों, नदियों और फूलों के माध्यम से दिव्यता का अनुभव करती हैं। प्रकृति उनके लिए ईश्वर से जुड़ने का मार्ग है। हालाँकि, "यामा" केवल प्रकृति-प्रेम तक सीमित नहीं है। संग्रह में गहरा मानवीय संवेदना भी झलकती है। वह प्रेम की पीड़ा, अकेलेपन की व्यथा और जीवन की अनिश्चितता को व्यक्त करती हैं। उनकी कविताओं में विरह का स्वर है, जो प्रेम की अधूरी अभिलाषा को दर्शाता है।

महादेवी वर्मा की आध्यात्मिक खोज संग्रह का एक महत्वपूर्ण पहलू है। वह जीवन के सार को समझने और आत्मिक शांति प्राप्त करने का प्रयास करती हैं। उनकी कविताओं में मृत्यु का भय नहीं है, बल्कि मोक्ष की प्राप्ति की आशा है। वह मानती हैं कि मृत्यु के माध्यम से ही आत्मा परम

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

चेतना में विलीन हो सकती है। "यामा" की भाषा सरल और सारगर्भित है। वह प्रतीकों और उपमाओं का चौक से प्रयोग करती हैं, जिससे उनकी कविताएँ चित्रात्मक हो उठती हैं। उनकी कविताओं में संगीत का भाव भी है, जो पाठक के मन को छू लेता है।संक्षेप में, "यामा" महादेवी वर्मा की काव्य प्रतिभा का शिखर है। यह संग्रह प्रकृति, प्रेम, मानवीय संवेदना और आध्यात्मिक खोज जैसे विषयों को गहराई से छूता है। उनकी मधुर भाषा और भावपूर्ण शैली पाठकों को आकर्षित करती है और उन्हें जीवन के गहरे सत्यों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध कवियित्री और लेखिका थीं। "दीपशिखा" उनका पांचवां कविता संग्रह है, जो 1942 में प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह में 1936 से 1942 तक रचित 147 कविताएं शामिल हैं। "दीपशिखा" केवल कविताओं का संकलन नहीं है, बल्कि यह आत्म-अनुभूति, करुणा, वेदना और आशावाद का संगम है।

"दीपशिखा" की विशेषताएं:

आत्म-अनुभूति: इस संग्रह की कविताएं महादेवी वर्मा के व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं पर आधारित हैं। उनकी कविताओं में प्रेम, हानि, निराशा और आशा जैसे विषयों को गहराई से दर्शाया गया है।

करुणा: "दीपशिखा" में करुणा भावना का प्रबल प्रभाव है। महादेवी जी प्रकृति, प्राणियों और मानवता के प्रति गहन करुणा व्यक्त करती हैं। उनकी कविताओं में पीड़ितों के प्रति सहानुभूति और दुखों को कम करने की इच्छा स्पष्ट है।

वेदना: महादेवी जी के जीवन में अनेक दुखद घटनाएं घटित हुईं, जिनका प्रभाव उनकी कविताओं में भी परिलक्षित होता है। उनकी कविताओं में जीवन की विडंबनाओं और क्षणभंगुरता का चित्रण मिलता है।

आशावाद: निराशा और वेदना के बावजूद, "दीपशिखा" में आशावाद का संदेश भी मौजूद है। महादेवी जी मानती हैं कि जीवन में हमेशा अंधकार नहीं रहता, सुबह का उजाला भी अवश्य आएगा।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved,** **UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022**

"दीपशिखा" का महत्व:

हिंदी कविता में नया आयाम: "दीपशिखा" हिंदी कविता में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। इस संग्रह ने हिंदी कविता को स्त्री दृष्टिकोण और आधुनिकता प्रदान की।

भाषा की शक्ति: महादेवी जी ने भाषा का अद्भुत प्रयोग किया है। उनकी कविताओं में शब्दों का चयन, प्रतीकों का प्रयोग और बिंबात्मक भाषा पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

सामाजिक सरोकार: "दीपशिखा" केवल भावनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक सरोकार भी प्रकट हुए हैं। महादेवी जी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और अन्यायों पर भी अपनी आवाज उठाई है। "दीपशिखा" हिंदी साहित्य की एक अमूल्य रचना है। यह केवल कविताओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह जीवन, प्रेम, वेदना और आशा के दर्शन का द्वार भी है। महादेवी जी की कविताएं आज भी पाठकों को प्रेरित और प्रभावित करती हैं।

निष्कर्ष

समकालीन रचनाकारों द्वारा वृद्धा विमर्श का चित्रण हिंदी साहित्य को समृद्ध बना रहा है। यह साहित्य न केवल मनोरंजक है, बल्कि समाज के लिए भी महत्वपूर्ण संदेश देता है। वृद्धजनों के प्रति हमारी सोच और दृष्टिकोण को बदलने में यह साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ:

- अग्निहोत्री, वी.एन.: "हिंदी साहित्य में वृद्धा विमर्श" (2018)
- शर्मा, गोपीराम: "समकालीन हिंदी कथा साहित्य में वृद्धा विमर्श" (2023)
- वृद्धा विमर्श: स्वरूप और संदर्भ" - डॉ. रमाकांत शर्मा
- "समकालीन हिंदी साहित्य में वृद्धा विमर्श" - डॉ. शर्मा